भगवत् कृपा

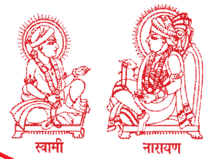

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 28 अंक : 4 | 15.7.2005 शुक्रवार (जुलाई-अगस्त) | प्रति अंक : 10.00

प्रार्थना के शुभ अवसर आए रे ....

हर साल की तरह अब की बार गुणातीत समाज के भक्तों की धन्यता, आनंद, प्रार्थना के पर्व...

✱ *'गुरुपूर्णिमा' का महामंगलकारी दिन – 21 जुलाई, गुरुवार !*

✱ *'रक्षाबंधन' का पवित्र त्यौहार – 19 अगस्त, शुक्रवार !*

✱ *प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन – 1 सितंबर, गुरुवार !*

ये सभी दिन नज़दीक आ रहे हैं। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की बातों में लिखा है कि–

'सबसे पहले तो मानवदेह मिलना दुर्लभ, उससे भी अधिक सत्संग मिलना दुर्लभ और सत्संग मिलने के बाद एकांतिकभाव सिद्ध करना दुर्लभ में दुर्लभ।'

हमारा कितना परम सौभाग्य है कि प्रभुकृपा से हमारे जीवन में तीनों अमूल्य बातें शक्य बनी... प्रथम तो मानवदेह मिला, फिर बिना कोई साधन किए **सत्संग यानि 'सत्पुरुष'** सामने से मिल गए और वे हमें एकांतिकभाव सिद्ध कराने तुले हुए हैं !

कई बार सहज यह प्रश्न होता है कि हमारा कल्याण-आत्यंतिक मोक्ष कराने वाले 'सच्चे गुरु' मिल गए, उसकी प्राथमिक प्रतीति क्या ? चेतना का परम चेतना के साथ स्वतः संबंध है। सो, जिनका प्रथम दर्शन करते ही हमारा दिल व दिमाग दोनों एक साथ कबूल कर लें कि वे हमारे हैं और हम इनके हैं... जहाँ ऐसा एहसास हो वहाँ हम विश्वास से मानें कि हमें हमारी चेतना के राहबर मिल गए।

'संत' की परिभाषा केवल भगवा कपड़े मात्र से नहीं है। प.पू. गुरुजी के शब्दों में– **(स् + अंत = संत)** *यानि 'अंत तक साथ रहे वह संत !'* अंत तक अर्थात्– केवल सत्तर-अस्सी साल की आयु का एक जन्म मात्र नहीं; बल्कि जन्मों जन्म तक–**जब तक हमारी चेतना पूर्णता को ना पा जाए तब तक–हमारे पीछे निरंतर परिश्रम लेकर लगे ही रहें–वे कहे जाएं प्रभु के अखंड धारक 'असली संत'** ! हम सब के लिए 'अध्यात्म स्वर्ण युग' चल रहा है कि पारसमणि जैसे गुणातीत स्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई जैसों की हमें गोद मिल गई !

इतिहास में एकलव्य, सत्यकाम जाबाली, उपमन्यु, भक्त ध्रुव, शबरी, मीरां वगैरह ने गुरुभक्ति की अजोड़ मिसाल रखी है। दूसरी ओर गुणातीत परंपरा में श्रीजी महाराज ने स्वयं प्रभु होते हुए भी 'गुरुभक्ति' अदा करने की रीति-नीति अपने जीवन से सिखाई... गुरु रामानंदस्वामिजी के एक कहने से कि मेरे आने तक खम्बे से लिपट कर रहना यानि– सद्. मुक्तानंदस्वामिजी जैसे संत से चिपके रहना... वो आज्ञा श्रीजी महाराज ने शिष्य रूप में शिरोधार्य करी... तत्पश्चात् गुरु गुणातीत तो अनोखी गुरुभक्ति, सेवा, अजोड़ समर्पण व

स्वामीसेवकभाव को अपने वर्तन द्वारा पराकाष्ठा पर ले गए... भगतजी महाराज, कृष्णजी अदा, जागास्वामी, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य योगीजी महाराज ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के ही जीवन की ओर सतत् निगाह रख कर अद्भुत जीवन जीया और... प.पू. काकाजी-प.पू. पप्पाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा सौंपे हर एक क्रांतिकारी कार्य के उत्थान में हर प्रकार का समर्पण किया एवं एक-दूसरे के पूरक बन कर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब एवं प.पू. हरिभाई साहेब के सहयोग से एक नूतन दिव्य समाज-'**योगी परिवार**' का सर्जन किया !

प.पू. काकाजी हमेशा कहते कि– शुद्ध गुरु गुणातीत परंपरा को ज़रा भी आँच आए बिना इस समाज की स्थापना हुई है। और... लोक की या कोई भी परवाह किए बिना कैसे भी विपरीत संजोग में **योगी के संबंध वालों के साथ खड़े रहना–वही रही उनकी जीवनशैली** !

प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी ने जिस दृष्टि से गुरुहरि योगीजी महाराज को निहारा है, वह उन्होंने हमारे लिए एक अद्भुत आदर्श रख दिया... अखंड दिव्यभाव व निर्दोषबुद्धि युक्त गुरुभक्ति उनके जीवन से झलकती रही। किस प्रकार के गुरुपूजन व गुरुदक्षिणा से हमारे गुरु हम पर राजी होते हैं उसका केवल मार्गदर्शन ही नहीं, बल्कि हम सब पर कृपा करके उन्होंने स्वयं जीकर बताया है।

दरअसल हमें जाग्रत रख कर प्रभु की राह पर अग्रसर करने यानि–सत्त्व-रज-तम से परे ले जाकर, ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति कराने ही प्रभु के अखंड धारक ऐसे स्वरूप धरती पर आते हैं...

उनकी मौजूदगी मात्र ही हमें सुकून-शांति देती है।

उनकी करुणामयी-वात्सल्यभरी नज़र मात्र हमारे द्वंद्व सुलझा देती है।

इससे भी अधिक–

उनके कार्य को निरंतर आगे बढ़ाने पूर्ण रूप से समर्पित होकर उनका साधन मात्र बन कर यदि हम चलने का प्रयास करेंगे, तो वे हमारी हर मुश्किलें खुद झेल कर हमारा आंतरिक रूपांतर करके हम में ब्रह्मरस भर देंगे !

प.पू. काकाजी हमेशा कहते कि प्रमाणिक बनो। तभी हम उदात्त सच्चे गुरु को पहचान पाएंगे। लेकिन–कई प्रलोभन, दूसरे आकार-आधार, महत्त्वाकांक्षा, अनेक आसक्तियाँ, छुपी कामनाएँ एवं वृत्तियों का राग उनके व हमारे बीच एक पतला-सा आवरण बन जाता है। उन्हें हम तिलांजलि देकर प्रभु व संत को पूर्ण रूप से समर्पित नहीं होते हैं।

ज्ञान-भक्ति करते हुए यदि उसमें ऐसे तत्त्व की मिलावट हो जाए, तो चाहे वर्षों तक हम सत्पुरुष के नज़दीक क्यों न रहें, पर हमारा आध्यात्मिक विकास रूक जाता है। और...इसी कारण हम प्रभु व संत को सतत् अपने निकट अनुभव नहीं कर पाते; जबकि आँखों के साथ जैसे पलकों का संबंध है, वैसे वे तो हमेशा हमारे साथ ही होते हैं। जिस प्रकार मछली अपनी संतान को दूर से देख-देख कर ही उसका सेवन करती है, कछुई केवल ध्यान द्वारा ही संतान का सेवन करती है और मादा पक्षी अपने अंडों को सेकर या छू कर अपनी संतान का सेवन करती है; उसी प्रकार सच्चा गुरु अपने संबंध में आए सेवकों का सेवन करके उनके स्वभाव का रूपांतर करके उन्हें प्रभु में जोड़ने का भगीरथ कार्य करता है।

पर, हमारा ध्येय अगर निश्चित नहीं होगा, तो अध्यात्म की हमारी यात्रा निष्फल हो जाएगी। जितनी ध्येय की स्पष्टता होगी, उतनी ही हमें अपने मार्ग की दृढ़ता और एकाग्रता सिद्ध होगी व जितनी दृढ़ता होगी, उतनी हमें सफलता प्राप्त होगी।

गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज कहते थे कि– गुरुकृपा से ब्रह्मविद्या की कॉलेज में हमें दाखिला तो मिल गया है; पर, **अक्षररूप होना**– अब यह **हमारा ध्येय-निशान-मकसद होना चाहिए।** तभी हम गुणातीत स्वरूपों की माला के मोती बन पाएंगे और वही जीवन की सार्थकता है।

लेकिन, हम क्या करने आए हैं और क्या कर रहे हैं ? हम अपनी बुद्धि, शक्ति, अपने साधन के मुताबिक सब कुछ करते जरुर हैं, पर हमारे मायिक चक्षुओं से–अहंयुक्त नापदंड से भगवान अखंड रखी ऐसी विभूतियों को ही नापते रहते हैं। सो ही हमें सफलता प्राप्त नहीं होती और ऐसी अद्भुत प्राप्ति के बावजूद मन में अशांति, उद्वेग, शंका-आशंका, दुविधा बनी रहती है। फिर भी **जीवों पर अपार कृपा करके**

ऐसे समर्थ गुणातीत गुरु मानव कक्षा की मर्यादा में रह कर हमारे जैसा ही जीवन जीते हैं, ताकि शिष्य आसानी से उनके पद्‌चिन्हों पर चलने की हिम्मत कर पाएं।

और... अब गुरुपूर्णिमा के बाद **'रक्षाबंधन'** का पावन पर्व आ ही रहा है ! ऐसे गुणातीत गुरु के प्रति यदि हम श्रद्धा, विश्वास और अडिग निष्ठा के दीप भीतर में जलाएं रखेंगे व उनके सिद्धांत-मर्जी के मुताबिक जीवन जीएंगे, तो वे हमारी हर प्रकार से रक्षा करेंगे ही। **हमें उनके पास रक्षा की प्रार्थना भी नहीं करनी पड़ेगी**; क्योंकि हमारे जन्मों-जन्म के **'योगक्षेम की जिम्मेदारी'** बिना कहे उन्होंने ले जो रखी है। प्रगट के उपासकों के लिए तो यही **'सच्चा रक्षाबंधन'** कहा जाए !

तत्पश्चात्–जिनके पृथ्वी पर अवतरण से हम धन्य हुए, जिन्होंने हम से अनुपम प्रीति करी और बाहरी व आंतरिक द्वंद्वों के बंधनों से मुक्त करके जीतेजी हमें सुखी किया–ऐसे गुणातीत समाज के प्राणाधार **प.पू. पप्पाजी** का **प्रागट्‌य दिन** पहली सितंबर को आ रहा है। तो, सर्वप्रथम उन्हें कोटि वंदन... कोटि नमन !

प.पू. पप्पाजी को जब से गुरुहरि योगीजी महाराज में 'श्रीजी' के अखंड प्राकट्‌य की प्रतीति हुई, तब से आज तक–९० वर्ष की आयु में देह में इतना कष्ट होते हुए भी हमारे चैतन्यों के विकास के लिए मूक रह कर निरंतर बल, प्रेरणा, सूझ, सेवा, दर्शन का सुख दे रहे हैं। धन्य-धन्य हमारे प्रति की उनकी अप्रतिम प्रीति-अपनेपन को !

अभी हाल ही की बात है कि 2005 जनवरी महीने में प.पू. पप्पाजी की तबियत अत्यधिक बिगड़ने के समाचार मिलने पर प.पू. गुरुजी व मुक्तों दिल्ली से विद्यानगर गए थे... इतनी बीमारी में भी प.पू. पप्पाजी बार-बार अपना हाथ ऊँचा उठा कर करुणामयी वात्सल्य दृष्टि से योगी के संबंध वालों को खुश करने-एक सांत्वना देने की ही निरंतर कोशिश में लगे थे। हमें तो थोड़ा-सा सिरदर्द होता है, तब भी आने-जाने वालों से चिड़चिड़ापन जैसा हो जाता है। पर, प.पू. पप्पाजी को तो हार वगैरह पहनाया, तब भी हमें खुश करने वे हमारा सब कुछ ग्रहण कर रहे थे... यह मार्मिक दृश्य देख कर-दर्शन करके आँखें नम हो गईं... हम विचार करें कि ओहो ! हमारे कैसे पुण्य ? कैसे भाग्य ? जो केवल कृपा में हमें **ऐसे गुणातीत गुरु के संग जीकर उनके जीवन को निहारने का अलभ्य अनमोल मौका मिला है....**

तो, हे श्रीजी महाराज ! हे सर्व गुणातीत स्वरूपों !
आप तो हमारे हुए ! पर अब हम पूर्ण रूप से आपके ही बनें और...
आपका बल, आपका प्रकाश, आपका प्रेम हर संजोगों में हर एक अनिष्ट से हमारी रक्षा करेगा ही, ऐसा विश्वास हमारे भीतर में हमेशा बना रहे...
आपकी कृपा और अपरिमित सत्ता में हमारी श्रद्धा-आस्तिकभाव कायम रहे...
हम कभी भी अपने क्षुद्र अहम् का पोषण न करें–
यही याचना है।

आइए, **गुरुपूर्णिमा-रक्षाबंधन** और **प.पू. पप्पाजी के प्रागट्‌य दिन** के मंगल अवसरों पर ***प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी*** द्वारा दिए ***आशीर्वचन*** पढ़ें और मनन करके जीव में धारने सच्चा गुरुपूजन करें....

सभी बालकों और युवकों को गुरुपूर्णिमा के शुभाशीष।
तुमने जो मांगा वह तत्काल सिद्ध हो ही जाएगा, उसका पक्का भरोसा रख कर
खुले दिल से-प्रमाणिक रूप से **प्रभु और संत की हाज़िरी मान कर वर्तना।**
अब तो मांगना कुछ बचा ही नहीं है। जीया करना है और आनंद किया करना है व अपना फर्ज़ अदा करना है।
सर्वोपरि कर्ताहर्ता प्रभु को ही माने हैं, तो अब क्या बाकी रहेगा ?
मन है ही नहीं, हम केवल पू. बापा का प्रकाश हैं; तो, उन्हें ही सारे निर्णय लेने दें।
उनकी पसंद का जो सूझे वह किया करना।
अब तो स्कूल खुल गई होंगी, सो पढ़ाई भी ठीक से करना
और
सुबह-शाम स्वरूपयोग व साप्ताहिक सभा !

तो अखंड शांति, सुख और आनंद मिलता रहेगा।
साथ ही, **दो मित्रों–एक बड़ों में से और एक सरीखों में से–बनाए या नहीं ?**
यह पक्का कर लेना।
तो, सत्संग का आनंद आएगा और जीव अतिशय बल को पा जाएगा।
तकलीफ में प्रार्थना करना, तो सभी हल मिलेंगे ही।
हमारा अहोभाग्य कि–
पू. बापा ने मूल अज्ञान टाल कर कृपा करके हमें जीतेजी ही अक्षरधाम में रखा।
तो, पुरानी आदतें बिलकुल छोड़ कर अब गुरुजी की प्रसन्नता के लिए ही जीवन जीना।
बेचैनी में रात को प्रार्थना करके तीव्र पुकार करनी, तो रास्ता-हल जरुर निकलेगा।
प्रभु और बड़ों के पास बेतुका आग्रह पकड़े नहीं रखना... तो गुरुजी सब कुछ ठीकठाक कर देंगे...
युवकों, बहनों और संतों की सेवा करनी, तो देने वाले को प्रभु दुगना ही दे देंगे।
लेकिन, आध्यात्मिक नापदंड अलग होता है जो दिखाई ना दे, परंतु भला ही करता है।
इकट्ठे होकर भजन करना। **सर्वत्र सुहृद्भाव बढ़ाना।**
सभी में एक अच्छा गुण होता ही है–सो, दत्तात्रय की दृष्टि-समझदारी दृढ़ करना।
तो अखंड अक्षरधाम का सुख सभी को मिलेगा... गुरुपूर्णिमा के शुभाशीष सह सभी को याद।
सभी को आनंद करवाना।
सभी मिलजुल कर स्वधर्मयुक्त काम करें और खाली समय में माहात्म्ययुक्त भक्ति करें,
तो दोनों पाँव अखंड अक्षरधाम में ही ठहरेंगे...
दूसरे किसी की क्रिया या स्वभाव के लिए चिंता ना करके प्रेम से हिलमिल कर काम करना।
यहाँ के लोग अच्छे-बुरे की सलाह तक (किसी को) नहीं देते। यदि मित्र होगा, तो वह साथ में खड़ा रहेगा।
सब कुछ मानो बिना कोई सहारे ही चलता हो ऐसा लगता है।
फिर भी सभी खाते-पीते सुखी हैं;
जबकि **हमें तो प्रभु के वरदान हैं, फिर भी आपसी हठ, मान, ईर्ष्या, मत्सर, असूया, जलन के भाव जाते नहीं!**
इसलिए मिलजुल कर अहोहोभाव से काम नहीं होता।
ऐसा **मूल अज्ञान-'अहम् रूपी बड़प्पन का भ्रम' रहता है और प्रभु के आशीर्वाद फलते नहीं हैं।**
वर्ना **निष्ठा वाले को व्यवहार का दुःख तो ज़रा भी हो ही नहीं सकता।**
सो सभी को बल देना।
आत्मबुद्धिवाले मित्रभाव दृढ़ करें
और
निर्दोषबुद्धिवाले स्त्री, पुरुष, बालकों सर्वत्र-अल्पसंबंध वाले में भी–
वचनामृत कारियाणी ९, मध्य ६३, अंत्य.२ के मुताबिक दिव्यभाव रख कर, प्रभु प्रेरणा करें वैसे
उनके साथ, **सुहृद्भाव से काम करने की आदत डालोगे तो** मूल अज्ञान बाधा रुप नहीं होगा
और
महाशक्ति पैदा होगी।
'**बाह्यवृत्ति**' बिलकुल ही बंद करके, '**गुरुमुखी अंतर्दृष्टि**' पल-पल रख कर
जो प्रेरणा हो वह करना और अहोहोभाव पकड़ रखना।
तो इस लोक और परलोक का सुख - समृद्धि जरुर मिलेगा ही–यह अनुभवसिद्ध बात है।
सभी को गुरुपूर्णिमा के शुभाशीष।

महाराज का प्राकट्य चारों प्रकार से पक्का समझ लेना, तो एकांतिक का प्रसंग किया कहा जाए !
वह तो खूब ही किया, लेकिन वैसी प्राप्ति होती क्यों नहीं दिखाई दी-क्यों महसूस नहीं हुई ?
क्योंकि – **प्रभु को प्रगट और 'सर्वोपरि' मानने में ही**
कहीं कोई सत्ता या गुण या मान्यता का प्रभाव पड़ जाता होगा–अंतराय रहता होगा।
अल्पसंबंध वाले दिव्य माने नहीं जाते होंगे, तो भला दिखाई तो कहाँ से देंगे ?
अक्षरधाम के परमतत्त्व को मानवदेह में प.पू. बापा एवं मुक्तों के रूप में पहचाना,
फिर भी दोनों स्वरूप–'**हृदय में जो है, वही बाहर है**'–यूं पहचानने पड़े
यूं 'दोनों मूर्तियाँ एक ही हैं'–ऐसे प्रकाश के दिव्य अनुसंधान में रहते हुए **अखंड 'अक्षरधाम'** ही माना जाएगा
और
आनंद वर्तेगा।
दूरी महसूस होना और ख्याल पड़ना-वह सब मन की कल्पना का अज्ञान है।
तो अब, गुरुपूर्णिमा पर दृढ़ संकल्प करना कि –
हम ब्रह्मस्वरूप ही हैं और महाराज अखंड साथ में हैं, हैं और हैं ही
तथा
पल-पल का संचालन जब उनका ही चल रहा है,
तो, धीरज रख कर आगे-पीछे उन्हें देखने का इंतज़ार करना; तुरंत दिखाई पड़ेंगे।
सभी लग पड़ना। स्वरूपयोग नियमित रूप से दो बार करना ही
और
ज्ञानगोष्ठी, सत्कर्म व रात को प्रार्थना करने में नागा करना ही नहीं।
अब नवजन्म ही हुआ मान कर, प्रभुसत्ता के बल पर **मिलजुल कर कार्य करते जाना...**
नई दृष्टि वाली यह आदत डालनी और उसके मुताबिक ही जीना शुरु कर देना।
मूल अज्ञान टालने वाले गुरु तो मिले और गुरु पूर्ण थे-सही थे व हैं,
लेकिन शिष्य झेलें नहीं और लापरवाही रखें, सो खोट रहती है।
सो, शूरवीर होकर मूर्ति धार कर ही सभी कार्यों का आरंभ करना।
अब ज्ञान बहुत-बहुत हो गया, लेकिन जीवन के छोटे-बड़े सभी प्रसंगों में
इसे उतार कर अब उस प्रकार से जीना, तो **आश्चर्यकारक घटनाएं बनती जाएंगी**
और
हल ना मिले तो तीव्र प्रार्थना करनी।
गुरु गुणातीत, प्रभु सहजानंदजी और वे दोनों जिसमें आ गए वह प्रत्यक्ष परम एकांतिक –
उन्हें सर्वत्र-सर्वभाव से आगे रख कर, **स्वरूपलक्षी** समझदारी का **धैर्य एवं** सचेतन सक्रिय साक्षीभाव से **सत्कर्म**–
इन दोनों की लगन लगा देना तो आध्यात्मिक धमाका होकर दिव्यचेतना में जरुर प्रवेश मिल जाएगा...
और तब तक –
किसी को भी उपदेश देने करने में या समझाने में ना पड़ें और सौंपी हुई सेवा करके केवल भजन किया करें,
तो ये सब कुछ अपनेआप हो जाएगा।
गुरुपूर्णिमा पर सभी के अंतर में ज्योति प्रगटे
और
हृदयमंदिर में प्रभु बैठ जाएं और सदा सुखी रहो–यही प्रार्थना।

– प.पू. काकाजी महाराज,1973

सारे हिन्दुस्तान में आज का यह दिन मनाया जाएगा।
'गुरु गुणातीत' यानि **'प्रत्यक्ष भगवान का स्वरूप !'**
भगवान प्रत्यक्ष और प्रगट रहते ही हैं। जिन्होंने उन्हें राजी कर लिया है, ऐसे संत हमें मिले हैं।
ऐसे गुरु की शरण में सभी को जाना चाहिए। शास्त्रमात्र का यह सार है।
गुरु की प्रसन्नता के मुताबिक हम वर्तें-वही सच्चा **'गुरुपूजन'** है।
गुरुपूर्णिमा के दिन सभी गुरुदक्षिणा देते हैं।
उनकी मर्जी के मुताबिक सारे वर्ष वर्तने के संकल्प की हम उन्हें आज दक्षिणा दें, उसमें पूजन आ गया।
यह संकल्परूपी भेंट सभी दे सकते हैं।
निष्ठा वाले सभी मुक्त बापा के स्वरूप हैं।
छोटे से छोटे को लेकर बड़े से बड़ा—इनमें उम्र, अनुभव और प्रकृति इन तीनों से भेद होगा।
वे सभी ब्रह्मनियंत्रित ही चल रहे हैं; यह हमारी मानीनता—कन्वीक्शन बन गई है।
सो, उलझन, विक्षेप और अभाव की बात अब रही नहीं।
ब्रह्मसमाज (गुणातीत समाज) ब्रह्मनियंत्रित ही है। फिलहाल कोई 'गुणबुद्धि वाला' नहीं है।
(अर्थात्— सभी निष्ठा वाले एवं आत्मबुद्धि वाले तो हैं ही !)
सो, सभी के प्रेरक—प्रवर्तक वो (प्रगट स्वरूप) हैं।
यह मानने का संकल्प करके यूं वर्तने का आज निर्णय करें
और
पूरे वर्ष जाग्रत रह कर इस बात का ध्यान रखें; तो महाराज बहुत राजी हो जाएंगे।
आध्यात्मिक दृष्टि से इसे आज देखें।
हम **अहंता, ममता, हठ, मान, ईर्ष्या को छोड़ कर संप, सुहृद्भाव और एकता से जीवन जीएं** तो,
काल-कर्म-माया का भय हमें नहीं रहेगा।
जगत को भले रहे। योगी महाराज 'साक्षात्' हमें मिले हैं।
सारी जिंदगी उन्होंने यही एक सिखाया—
संप से रहो, सुहृद्भाव रखो, खुद की ही खोट देख कर काम किया करो।
एक-दूसरे की मदद करते हो जाओ, दूसरे के दोष को निजी गिन लो
और
सामने वाला कैसे सुखी हो—यह कोशिश हम करें।
किसी का चैन छीन कर हम सुखी हों ऐसा ना करें।
भले हमें देहभाव छोड़ना पड़े, लेकिन दूसरा कैसे सुखी हो—ऐसा हम गुरु का जँचता करें।
सारी जिंदगी हमारे गुरु ने इसी प्रकार सहा है और सभी को सुखी किया !
बिजली या वड़वानल जैसे संत के साथ असाधारण लगाव हो गया-यह बहुत बड़ी बात बन गई।
ऐसे संत महाराज के अंश ही हैं।
बापा ने कृपा करके हमें ऐसों की भेंट दी है और पहचान कराई है।
इन संतों के दिल में और कोई नहीं हैं, लेकिन (हम) जो 'जोगी' के हैं वे सभी इनके हैं।
हमारे सब के लिए वे फ़िकर करें और किस प्रकार हम आगे जाएं उसकी प्रार्थना किया करते हैं।
ऐसी निष्काम प्रार्थना बापा सुनते हैं। ऐसी प्रार्थना के बल से सभी सुख-चैन से आगे जा रहे हैं।
सुख, शांति, आनंद, मस्ती, कैफ और जोश रख कर सभी जीते हो गए हैं—वह उनका प्रताप है।

ऐसे सुहृद्‌भाव से काम करें कि– **किसी से भी जुड़ा हुआ हो–वह (हम) सभी का** !
इस समाज का वह सदस्य बना ! वह कैसे सुखी हो जाए ? आनंद में रहे और शांति पाए।
ऐसी कोशिश–ऐसी सेवा देह और मन से सभी को करते हो जाना है।
किसी से भी जुड़ा हुआ आया हो, वह हमारे (गुणातीत समाज के) किसी (भी) स्वरूप का है ना ? वह अपना ही है।
उसकी परेशानी कैसे टले और वह कैसे प्रगति को पाए ऐसी कोशिश सभी को करनी चाहिए।
यूं, ऐसे काम करने वाले संत बापा ने तैयार किए हैं और दूसरे हो रहे हैं।
जो कसर बाकी हैं वह खत्म होने पर वे भी यह काम करते हो जाएंगे।
यूं बापा ने अपार कृपा करी है।
सभी सुख-चैन से आनंद के फव्वारे उड़ाते हो जाएं उससे बापा की महिमा बढ़ती है।
हम जोगी के हैं।
जोगी महाराज गए नहीं हैं–वह क्या ?
(हम) उनका डर रखते हैं। दूसरों के दोष देखते नहीं।
संबंधवाले को 'प्रारब्ध' होता ही नहीं–इसी सोच से कदम उठाते हैं।
अन्य सभी काल, कर्म, माया के आधीन हैं, लेकिन संत का संबंधवाला नहीं हो सकता।
'भक्त की (कोई) खोट के कारण कमीपेशी हो सकती है'– हम यह मानीनता रख कर,
किसी का कुछ भी गिने बिना बस किस प्रकार उसकी निष्ठा पक्की हो जाए वो परिश्रम करने लग पड़े।
वचनामृत गढडा प्रथम ६७ के मुताबिक हमारा जो संगी हो उसका देहभाव कैसे पिघले
और
वह सुखी हो वह उद्यम करते हो जाएं।
किसी की लाचारी नहीं, किसी से अपेक्षा नहीं।
भगवान का आसरा, बड़े संत का साथ और सुहृद्‌भाव रख कर
एक-दूसरे के पूरक रूप में काम करते हो जाएं।
एक-दूसरे की महिमा गाते हो जाएं।
हमने '**पॉली आध्यात्मिक सेन्टर**' की सोच निकाली !
'पॉली क्लीनिक' में सभी डॉक्टर्स इकट्ठे होकर काम करते हैं।
हॉस्पिटल में भले ही किसी डॉक्टर का केस दाखिल हुआ हो;
लेकिन उस रोग का जो एक्सपर्ट हो, वही उसको देखता-करता है।
फिर उसे यदि दूसरा रोग भी हो,
तो वह डॉक्टर ही उस रोग के निष्णात डॉक्टर को रेफर करता है और वही प्रीस्क्राईब करके दे देता है।
यूं सभी डॉक्टर्स इकट्ठे होकर मरीज को अच्छा करने लग पड़ते हैं।
ऐसे ही **यह ब्रह्मसमाज 'पॉली आध्यात्मिक सेन्टर' है।**
एकांतिक मुक्तों के क्षेत्र निश्चित हो गए हैं।
किसी को कोई शिकायत नहीं है-गिला शिकवा नहीं है
और
दूसरे किस प्रकार आनंद करें, संतुष्ट रहें और शांति को पाएं ऐसी सभी की कोशिश रही है।
भिन्न-भिन्न प्रकृति के मुक्त तैयार हो गए हैं।
ऍयरकंडीशन्ड कमरा हो और किसी को ठंड लगती हो, तो उसे हीटर वाले कमरे में भेजें।

किसी को शावर की जरुरत हो, तो वैसे कमरे में भेजें।
जहाँ हीटर हो, वहाँ ऍयरकंडीशन कहाँ से मिलेगा ?
लेकिन सभी संप से काम करते हो जाएं।
अतिशय लगाव और प्रीति से कोई ठिठुर गया हो,
तो उसे ज़रा गर्मी दे ऐसे एकांतिक के पास भेज दें, ताकि फिर से वो नॉरमल हो जाए।
यूं ऑपरेशन करने वाले, संभालने वाले, रीलेक्स कराने वाले, भोजन कराने वाले–
हर एक प्रकार के मुक्त जो हैं,
वे **सभी गुणातीत के ही यंत्र हैं ऐसी भावना से काम करते हो जाएं।**
जिसे जैसे एकांतिक की जरुरत हो वहाँ भेजते हो जाएं।
हर किस्म के एक्सपर्ट तैयार हो गए हैं।
यूं (यह) अच्छी तरह चलता रहे और **माहौल बिगड़े नहीं ऐसा संकल्प करें।**
कोई बड़ा नहीं है और कोई छोटा नहीं है।
सभी की जड़ में प्रत्यक्ष भगवान हैं। सो सभी उनके ही स्वरूप हैं ऐसा मानते हो जाएं।
किसी का कुछ ना जँचे, वह हमारा ही देहभाव है–ऐसा मानते हो जाएं।
सभी ग्रहण करते हैं, सभी के प्रेरक वे हैं।
मुझे वो नहीं दिखाई देता, माना नहीं जाता, सूझता नहीं–वह मेरा 'दोष' है।'
वर्ना **जबरदस्त चैतन्य का रास चल रहा है।**
सुख-चैन से ताल मिला कर सभी प्रगति कर रहे हैं।
यूं करते सभी को गुणातीत के साधर्म्य को पाना है।
सभी से हो पाए ऐसा है।
ऐसे भगवान मिले ! ऐसा जोग मिला ! ऐसी मौज मिली !
हमारे प्रारब्ध के साथ वे खेलते हैं-यह हमने जान लिया है।
(पर,) हर एक के प्रारब्ध अलग होते हैं, यह समझदारी (यदि) आ जाए तो–
'ऐसे नहीं और वैसे नहीं'–वगैरह कैसे रहेगा ? (अर्थात्-रहेगा ही नहीं।)
तो, ऐसा **'आदर्श जीवन'** जीने गुरुपूर्णिमा पर संकल्प करें।
उसके मुताबिक वर्त कर गुरुदक्षिणा अर्पण करें ऐसा बल दें
यही प्रत्यक्ष गुरुहरि के चरणों में प्रार्थना।

– प.पू. पप्पाजी महाराज, संवत् २०२९

'गुणातीत ज्योत' पत्रिका के सौजन्य से

कर्पूरचंदन !

(सारे) सत्संग में आत्मबुद्धि रखनी चाहिए। गढडा मंदिर से जुड़ा हुआ यदि कोई प्रण-नियमों का पालन नहीं करता है, तब भी वो हमारी ही लाज गई कही जाए। पर, उस देश के सत्संगी अलग व वो मंदिर अलग है–ऐसा जो कहते हैं, वे दरअसल 'सत्संगी' ही नहीं हैं।

– मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी

[सोलह प्रकरण की (पुरानी) स्वामी की बातें-प्र. १३, ३८४]

ताड़देव की गतिविधियाँ

हम सब भलीभाँति जानते हैं कि हर साल दिल्ली के 'ताड़देव' मंदिर में मई-जून के महीने में प.पू. काकाजी महाराज की जन्मजयंती निमित्त एक महीने का '**अनुष्ठान शिविर**' होता है, जिसमें रोज सुबह ठीक साढ़े छः बजे करीब डेढ़ सौ-दो सौ मुक्त इकट्ठे होकर प्राणायाम-धुन-भजन करके प.पू. गुरुजी की कथावार्ता का लाभ लेकर पूरे साल के लिए बैटरी चार्ज कर लेते हैं। पर, अब की बार संजोगाधीन यह केवल नौ दिन का रख पाए! हमारी साध्वी बहन–'**परछाई**' का अमदावाद में हुए किडनी ट्रांसप्लान्ट के ऑपरेशन के कारण सारी मशीनरी उसी में व्यस्त थी, सो यह कोर्स नौ दिन का रख पाए।

प.पू. गुरुजी कई बार कहते हैं कि अपना सारा **सत्संग एक 'दिव्य परिवार'** है। पू. परछाई दीदी के इस प्रसंग में **संयुक्त परिवार की भाँति** सुख-दुःख में भागीदार बन कर हर एक ने तन, मन, धन से और तीव्र भजन रूप सेवा करके भारी पुण्य कमाया। **भक्तों की भावना देख कर प.पू. गुरुजी की आँखें भी कई बार नम हो गईं।**

ऑपरेशन के बाद तबियत संभल जाने के समाचार आते ही 3 जून, शुक्रवार–गुरुवर्य योगीजी महाराज की जन्मजयंती एवं प.पू. गुरुजी के भागवती दीक्षा के मंगलकारी दिन की सुबह से '**अनुष्ठान शिविर**' की शुरुआत हुई। अनुष्ठान शिविर का लाभ लेने प.भ. पुनीतजी (पानीपत) की पत्नी सौ. अंजलीभाभी इसीलिए मायके से तुरंत लौट आए। प.भ. पुनीतजी पर प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसन्नता बताई और...प.भ. पुनीतजी से दीप प्रज्वलित करवाया। प.पू. गुरुजी ने बताया कि जीवन में **सत्संग की–संत की फर्स्ट प्रायॉरीटी केवल कहने मात्र नहीं, पर दिल की सच्चाई से मौके पर ऐसी होनी चाहिए।** नौ दिन गुरुवर्य योगीजी महाराज के जीवनचरित्र में से प.पू. गुरुजी ने बातें समझाईं। पूरे महीने का क्वोटा मानो प.पू. गुरुजी ने भक्तों पर कृपा करके नौ दिन में परोस दिया! उन बातों का निचोड़ दे रहे हैं...

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

* हमें लगेगा कि जो लाभ एक महीने तक मिलता था, वो अब की बार केवल एक सप्ताह ही मिलेगा। पर, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने आशीर्वाद दिए हैं कि जितना काम दूसरी जगह पर एक कल्प में होता है, वो यहाँ एक दिन में होता है... ऐसा यह **प.पू. काकाजी का स्थान है।** हम ऐसी बातें सुनते हैं, 'हाँ-हाँ' भी करते हैं पर सच में विश्वास से मानते नहीं। विश्वास से यह मानेंगे, तो एक सप्ताह में यह लाभ मिल जाएगा।
* मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के समय में एक भक्त ने सुना कि अक्षर के रोम-रोम पर अनंत कोटि ब्रह्मांड उड़ते फिरते हैं। उसने अपनी सीमित बुद्धि से चौकीदार को पूछा कि तुमने कभी स्वामी के शरीर पर ब्रह्मांड उड़ते देखे हैं? उसके मन में ऐसा था कि चौकीदार तो चौबीस घंटे मंदिर में रहता है; स्वामी के बारे इसे ही ज्यादा पता होगा। यह पूछने पर चौकीदार बोला कि–'स्वामी बड़े और उनके गप्पे भी बड़े!' **दरअसल उस भक्त को यह बात जागास्वामी– भगतजी महाराज जैसों से पूछनी चाहिए थी,** जिन्हें स्वामी के स्वरूप की सम्यक् पहचान थी और जो इस बात का गूढ़ार्थ समझा सकते थे।
* संत हमें किसी भक्त से 'जोड़' करने का नियम देते हैं, तो हम लल्लु-पंजु जैसी जोड़ करते हैं। **जोड़ ऐसी करनी चाहिए जो हमें संत की महिमा समझा कर संत से हमारा संबंध दिन-प्रतिदिन दृढ़ कराती रहे।**
* अभी परछाई के ऑपरेशन में जिन-जिन ने सेवा करी उन्होंने बहुत पुण्य कमा लिया। पर–**'बेचारी को जरुरत है, सो करनी है'–ऐसा समझ कर करेंगे तो हम 'बेचारे' ही रहेंगे और महिमा से–ऐसा मान कर करेंगे कि 'ओहो हमारा अहोभाग्य कि हमें यह सेवा करने का मौका मिल गया'–तो वाकई हमारे भाग्य खुल जाएंगे!**
* दरअसल हमें **हमेशा** ऐसा मानना चाहिए कि हम में जो भी बड़प्पन-बरकत है, वो हमें मिले बड़े पुरुषों के

कारण है। यह हम खाली ऊपर-ऊपर से बोलते जरुर हैं, पर भीतर में तो ऐसा रहता है कि **हमारी तो यह काबिलियत... हमारे में तो ये गुण... हम तो इतने ऊँचे खानदान के... हम तो ऐसा नहीं कर सकते... वगैरह में ही झूलते रहते हैं।**

मुझे याद है एक बार अपनी जन्म जयंती के अवसर पर गुरुवर्य योगीजी महाराज पहला वाक्य बोले थे कि यह सारा सम्मान 'जोगी' का नहीं हो रहा, बल्कि शास्त्रीजी महाराज का है। 'जोगी' तो बर्तन मांझता था। केवल बोलने में नहीं, पर वो दिल की सच्चाई से ऐसा मानते थे।

- गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज जैसे, प.पू. काकाजी जैसे पुरुष हमें मिले, यह गुणातीत परंपरा हमें जो मिली है, यहाँ–ऐसी होली फॅमिली में रहने को मिल गया– अरे ! आनेजाने का हमारा संबंध हो गया–यह बहुत बड़ी घटना बन गई हमारे जीवन में। **ऐसे प.पू. काकाजी हमारे हिस्से आए, वह हमारी कैसी खुशकिस्मत ?**
- कई बार हमारी थींकिंग इस प्रकार होती है कि बड़े संत तो ठीक हैं, पर उनके आस-पास वाले बेकार हैं– जैसे कि हम तो दूध के धुले हुए हैं और बाकी सब घटिये हैं। पर, यह तो सोचें कि कई जगह हम भी ठीक नहीं होंगे। **हमारी ऐसी थिकिंग के कारण साधु को जो हमें मुफ्त में-बख़्शिश में देना है, उसमें रुकावट आ जाती है– वे दे नहीं पाते।**
- अगर हमें **संत से कुछ चीज आसानी से मुफ्त में ले लेनी है, तो हमें दूसरों का दोष कभी नहीं देखना चाहिए।** दूसरे कैसे भी होंगे; वो जानें और प.पू. काकाजी जानें। **हम ऐसा ही सोचें कि जैसे हमें सुधार रहे हैं, हमें आगे ले जा रहे हैं; दूसरों को भी संबंध तो वही हुआ है–तो उन्हें भी वे ही संभालेंगे।**
- **संत की अपेक्षा हमें अपनी बुद्धि का-अपने मन का-अपने वेल्यूएशन्स का भरोसा ज्यादा है।** प.पू. काकाजी कई बार एक वाक्य बोलते कि– 'तुम संत को मानते हो, पर साथ ही तुम भी हो।' प.पू. काकाजी का हम से संघर्ष यही है कि अब तुम मत रहो, सिर्फ मुझे रहने दो। और... हमें ऐसा है कि इतने सालों का घर कैसे खाली करें ? कई जन्मों की मन की यारी कैसे छोड़ दें ?
- सत्संग में हम अन्य भक्तों के स्वभाव सुधारने नहीं, बल्कि हमारे स्वभाव–प्रकृति टालने– हमारे दोष, हमारी शॉर्टकमिंग्स दूर करने के लिए आए हैं; जबकि **हम तो सत्संग में आने के थोड़े दिनों के बाद दूसरे भक्तों का स्वभाव देख कर उनका ऑपरेशन भी करने लग पड़ते हैं !** पर **इसमें हमारा अपना केस ही बिगड़ जाता है।**
- 'स्वामी की बातों' में एक बहुत अच्छी बात है कि– जैसा दूसरों को समझाने का आग्रह है, वैसा यदि खुद समझने का हो; जैसा दूसरों के दोष देखने का आग्रह है, ऐसा आग्रह अपने खुद के दोष टालने का हो–तो कोई कसर बाकी नहीं रहे।
- गुणातीत परिवार का मुख्य नियम यह है कि किसी का भी दोष-स्वभाव-प्रकृति देखना नहीं। '**गुणातीत ज्ञान का नवनीत**' में प.पू. पप्पाजी ने लिखा कि– '**किसी का भी देखना नहीं।**'
- हम दूसरों को '**सर्वोपरि स्वामिनारायण**' की निष्ठा करने का उपदेश देते रहते हैं। पर, अपने जीवन में ज़रा-सी गड़बड़ होने पर तुरंत ज्योतिषी के पास हाथ दिखाने-उपाय पूछने पहुँच जाते हैं।
- पहले हम अपनी निष्ठा पक्की कर लें। हमारी निष्ठा में ही गड़बड़ है। हम छोटी-छोटी बातों में डर जाते हैं कि अब क्या होगा ?
- हमें अभी केवल संत से लगाव हुआ है, हेतनिष्ठा हुई है। माहात्म्ययुक्त ज्ञाननिष्ठा की बात बहुत दूर है।
- सभी में आत्मबुद्धि–प्रीति रखनी ! केवल अपने मनपसंद से-चहेतों से ही रखें ऐसा नहीं करना। संबंध वाले सभी– चाहे कोई हमें पसंद भी ना हो, पर आत्मबुद्धि यानि कुटुंबभाव कि– ये हमारे हैं-यह रखें। **भले हम आपस में लड़ें-झगड़ें, पर आख़िर हम सब एक !**
- अत्यं. प्रकरण ११–'सीताजी की समझदारी' का वचनामृत हम सिद्ध करें। हमें बड़े पुरुष बिना कसूर डाँटे, तब भी दिव्यभाव पकड़े रखें। **उनका अवगुण नहीं लें, वही सत्संग दृढ़ हुआ।** हमें तो थोड़ा-सा दुःख आने पर ऐसा हो जाता है कि क्या मैं अकेला ही मिला हूँ ? हमने तो कितनी सेवा करी है, फिर भी हमें ही ऐसा दुःख... जो-जो आपने कहा वो करा है... वगैरह। हम कई बार ऐसा हकदावा करते हैं।
- सत्संग में हमारा पिन्डीकरण होना बहुत जरुरी ही है। सूखा आटे का कण अलग-अलग होता है, पर उसे

पानी डाल कर मल दें तो ? **संत इस प्रकार कसनी देकर हमारा पिन्डीकरण करता है और तभी सत्संग की चिकनाई आती है।**

✱ 'अक्षरपुरुषोत्तम' की हमारी प्रगट की ***उपासना*** है और ऐसे परम एकांतिक संत द्वारा वे हमें मूर्तिमान मिले हैं—वो हमारी ***निष्ठा*** है।

आज्ञा,

एकांतिक संत में प्रीति,

भगवदी के साथ सुहृद्‌भाव—लड़ते, झगड़ते हुए भी हम सब एक !

डिफरन्सिस—मतभेद रहे, पर इससे अलगाव थोड़ा हो सकता है ?

ये चार बातें-आज्ञा, उपासना, एकांतिक में प्रीति और भगवदी के साथ सुहृद्‌भाव—जीव का जीवन है।

पौधे (वनस्पति) का जीवन पानी है; उसे पानी नहीं देंगे तो वो सूख जाएगा। मछली का जीवन पानी है, पानी में से बाहर निकालें तो तड़फ कर मर जाएगी। इसी तरह ये चार चीजें जीव का जीवन है। ये चार चीजें नहीं होंगी—उससे अगर हट जाएंगे, तो हमारे जीव का नाश हो जाएगा—जड़ता को पा जाएगा। पर, स्वामी ने बताया कि **यदि भगवदी में सुहृद्‌भाव होगा तो बाकी की तीन चीजें अपने आप पीछे-पीछे आ जाएंगी।**

✱ आठ प्रकार के सत्संगी हैं। कोई मेहमान जैसे, नौकर जैसे, दिहाड़ी वाले जैसे, साथी जैसे, मंदिर में रहते हुए भी मंदिर के दुश्मन जैसे और कोई मालिक जैसे। हमें मालिक जैसे बनना है। सब अपना ही मानेंगे तो किसी से मान पाने की अपेक्षा ही नहीं रहेगी।

✱ मंदिर और संतों का हमेशा गुण ही लेना। जिसे आध्यात्मिक प्रगति करनी हो, वो श्रद्धा, सेवा, समागम आख़िरी दम तक पकड़े रखे। पर **हमें गरज नहीं है क्योंकि महिमा नहीं है।** हम **'सेवा'** करते हैं, पर वो **'गधामजदूरी'** के रूप में पलट जाती है। **मन मार कर महिमा से जो भी करें—वो सेवा बन जाती है।**

✱ सत्संग असल में हमारे मन को नहीं जमता। मन का संग यदि छोड़ देंगे, तो सब जमने लगेगा।

✡✡✡

चातुर्मास के नियम...

18 जुलाई 2005, सोमवार से 12 नवंबर 2005, शनिवार तक

1. छोटी-मोटी हर एक दैनिक क्रियाओं का आरंभ भगवत्स्वरूप संत की स्मृति समेत एकाध मिनिट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।
2. जिन्हें सुविधा हो वे-शाम की धून व कथा में मंदिर आएं। जो ना आ पाएं वे अपने घर पर सुबह 20 मिनट धून व सायं आरती के बाद 20 मिनिट धून अचूक करें।
3. प.पू. काकाजी की 'पुष्प समाधि' की रोज 31 प्रदक्षिणा करें। जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास के दौरान जब भी मंदिर आएं तब 51 प्रदक्षिणा कर जायें।
4. सावन के महीने यानि—22 जुलाई से 3 सितंबर तक में एक महीना एक बारी भोजन लें।
5. 18 जुलाई-नियम की एकादशी, 27 अगस्त-जन्माष्टमी, 14 सितंबर-जलझीलनी एकादशी, 12 नवंबर-कार्तिक शुक्ला एकादशी—इन चारों दिनों व्रत रखें।
6. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं वचनामृत, ब्रह्मविद्या, पत्र संजीवनी, ब्रह्मप्रवाह व मोती बिखरे चौक में जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत् कृपा' के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें या आधा घंटा संतों की परावाणी टेप द्वारा सुनें या तो वीडियो कैसेट द्वारा दर्शन व कथा का लाभ लें।
7. **रोज सुबह या सायं चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।**
8. प.पू. काकाजी 'स्वामिनारायण' मंत्र पर खूब जोर देते थे। तो, चातुर्मास दौरान रोज मंत्रलेखन का विशिष्ट नियम रखना।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 18.7.2005, सोमवार – देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ

(2) दि. 21.7.2005, गुरुवार – *गुरुपूर्णिमा*
(सुबह 7:00 से 9:00 ताड़देव मंदिर में मनाएंगे। जो इस समय पर नहीं आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।)

(3) दि. 31.7.2005, रविवार – एकादशी, व्रत

(4) दि. 6.8.2005, शनिवार – श्रावण महीना प्रारंभ

(5) दि. 15.8.2005, सोमवार – 'भारत' स्वातंत्र्य दिन

(6) दि. 16.8.2005, मंगलवार – पवित्रा एकादशी, व्रत – ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने

(7) दि. 19.8.2005, शुक्रवार – *श्रावणी पूर्णिमा – राखी*
(सुबह 7:30 से 9:00 प.पू. गुरुजी की निश्रा में रक्षाकवच प्राप्त करने प्रार्थना करेंगे। जो इस समय पर नहीं आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'राखी' बंधवा सकेंगे।)

(8) दि. 24.8.2005, बुधवार – नाग पंचमी

(9) दि. 25.8.2005, गुरुवार – रांधण छठ (षष्ठी)

(10) दि. 26.8.2005, शुक्रवार – शीतला सातम (सप्तमी)

(11) दि. 27.8.2005, शनिवार – जन्माष्टमी, व्रत

(12) दि. 30.8.2005, मंगलवार – एकादशी, व्रत

(13) दि. 1.9.2005, गुरुवार – प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन

(14) दि. 7.9.2005, बुधवार – गणेश चतुर्थी

(15) दि. 14.9.2005, बुधवार – जलझीलनी एकादशी, व्रत

(16) दि. 15.9.2005, गुरुवार – वामन जयंती

(17) दि. 17.9.2005, शनिवार – अनंत चतुर्दशी, गणेश विसर्जन

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months.
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

To